(18)

10/5/18

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **4862** **HC**

Unique Paper Code : 62051404

Name of the Course : **B.A.(Programme) Hindi 'A' CBCS**

Name of the Paper : Hindi 'A'

Semester : IV

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

DESHBANDHU COLLEGE ★ LIBRARY ★ Kalkaji, New Delhi-19

Instructions for Candidates :

छात्रों के लिए निर्देश :

(a) Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **All** questions are compulsory.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

P.T.O.

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 20

(क) मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है, जिससे सदैव प्यास बुझती हैं। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसमें बरकत होती है। तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ ? इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो, और अवसर देखो, उसके उपरांत जो उचित, समझो करो।

अथवा

उसने तो अपने किए का फल पा लिया, पर मैं समस्या का समाधान नहीं पा सकी। इस बार की असफलता ने तो बस मुझे रुला ही दिया। अब तो इतनी हिम्मत भी नहीं रही कि एक बार फिर मध्यम वर्ग में अपना नेता उत्पन्न करके फिर से प्रयास करती। इन दो हत्याओं के भार से ही मेरी गर्दन टूटी जा रही थी और हत्या का पाप ढोने की न इच्छा थी न शक्ति ही और अपने सारे अहं को तिलांजलि देकर बहुत ही ईमानदारी से मैं कहती हूँ मैं हार गई, बुरी तरह हार गई।

(ख) उत्साह की गिनती अच्छे गुणों में होती है। किसी भाव के अच्छे या बुरे होने का निश्चय अधिकतर उसकी प्रवृत्ति के शुभ या अशुभ परिणाम के विचार से होता है। वही उत्साह जो कर्त्तव्य कर्मों के प्रति इतना सुंदर दिखाई पड़ता है, अकर्तव्य कर्मों की ओर होने पर वैसा श्लाघ्य नहीं प्रतीत होता। आत्मरक्षा, पर-रक्षा, देश-रक्षा आदि के निमित्त साहस की जो उमंग दिखाई देती है उसके सौन्दर्य को परपीड़न, डकैती आदि कर्मों का साहस कभी नहीं पहुँच सकता।

अथवा

वर्तमान की कौन-सी अज्ञात प्रेरणा हमारे अतीत की किसी भूली हुई कथा को संपूर्ण मार्मिकता के साथ दोहरा जाती है, यह जान लेना सहज होता, तो मैं भी आज गाँव के उस मलिन सहमे नन्हें से विद्यार्थी की सहसा याद आ जाने का कारण बता सकती, जो एक छोटी लहर के समान ही मेरे जीवन-तट को अपनी सारी आर्द्रता से छूकर अनन्त जलराशि में विलीन हो गया है।

2. हिन्दी नाटक की विकास यात्रा को स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

निबंध की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. 'मलबे का मालिक' कहानी विभाजन की त्रासदी को दर्शाती है–विवेचन कीजिए। 12

अथवा

मधूलिका की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

4. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। 12

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध का सार लिखिए।

5. 'अंधेर नगरी' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'भोला राम का जीव' में वर्णित स्थितियों का मूल्याँकन कीजिए।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए – 7

(i) प्रेमचन्दयुगीन कहानी

(ii) हिंदी उपन्यास

(17)

10/5/18

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **4863** **HC**

Unique Paper Code : 62051412

Name of the Course : **B.A.(Programme) Hindi-B-CBCS**

Name of the Paper : Hindi Language and Literature

Semester : IV

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

Instructions for Candidates :

छात्रों के लिए निर्देश :

(a) Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **All** questions are compulsory.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कहानी को परिभाषित करते हुए उसके विकास पर प्रकाश डालिए। 12

P.T.O.

अथवा

हिन्दी एकांकी का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

2. 'उसने कहा था' कहानी के आधार पर लहनासिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए। 12

अथवा

'बूढ़ी काकी' कहानी में प्रेमचंद ने बुजुर्गों की कारुणिक स्थिति पर प्रकाश डाला है।' इस कथन के संदर्भ में अपना मत प्रस्तुत कीजिए।

3. 'मेले का ऊंट' निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

"सदाचार का ताबीज' निबंध भ्रष्टाचार की समस्या पर तीखी चोट करता है।"-इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

4. 'अंधेर नगरी' नाटक में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

'बिबिया' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए- 10+10

(क) लड़ाई के समय चाँद निकल आया था, ऐसा चाँद जिसके प्रकाश से संस्कृत-कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है और हवा ऐसी चल रही थी जैसी कि बाणभट्ट की भाषा में 'दंतवीणोपदेशाचार्य' कहलाती है। वजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन-मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा-दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार लहनासिंह से सारे हाल सुन और कागज़ात पाकर उसकी तुरन्त-बुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते।

अथवा

आधी रात जा चुकी थी। आकाश पर तारों के थाल सजे हुये थे और उन पर बैठे हुये देवगण स्वर्गीय पदार्थ सजा रहे थे, परंतु उनमें किसी को वह परमानंद प्राप्त न हो सकता था जो बूढ़ी काकी को अपने सम्मुख थाल देख कर प्राप्त हुआ। रूपा ने कंठावरुद्ध स्वर में कहा-'काकी! उठो, भोजन कर लो। मुझसे आज बड़ी भूल हुई। उसका बुरा न मानना। परमात्मा से प्रार्थना करो कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दे।'

(ख) जिनके पिता स्टेशन से गठरी आप ढोकर लाते थे,उनको सिर पर पगड़ी संभालना भारी है। जिनके पिता को कोई पूरा नाम न लेकर पुकारता था, वह बड़ी-बड़ी उपाधिधारी हुये हैं। संसार का जब यही रंग हैं,तो ऊँट पर चढ़नेवाले सदा ऊँट पर ही चढ़ें, यह कुछ बात नही'। किसी की पुरानी बात यों खोलकर कहने से आज-कल के कानून से हनक-हज्ज़त हो जाती है।

अथवा

सेत सेत सब एक से, जहाँ कपूर कपास।
ऐसे देस कुदेस में, कबहुँ न कीजै बास।।
कोकिल बायस एक सम, पंडित मूरख एक।
इन्द्रायन दाड़िम विषय, जहां न नेकु विवेक।।

6. निम्नलिखित किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए - 7

(क) रिपोर्ताज

अथवा

(ख) प्रेमचंद युगीन उपन्यास

अथवा

(ग) संस्मरण और रेखाचित्र में अंतर

(18) 10/5/18

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **4864** **HC**

Unique Paper Code : 62051413

Name of the Course : **B.A.(programme) Hindi-CBCS**

Name of the Paper : Hindi - C

Semester : IV

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

छात्रों के लिए निर्देश :

इस प्रश्न-पत्र प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. किन्हीं **दो** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) कई बार यही क्रिया होती है, जैसे कई विजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएँ और यही क्रम चलता रहे। कितनी अपूर्व दृश्य था, जिसकी सामूहिक क्रियाएं, विस्तार और अनंतता हृदय की श्रद्धा, गर्व और आत्मानंद से भर देती थी, मानो भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए है।

P.T.O.

(ख) कहा नहीं, मगर देखती नहीं, कितना खुश हो गया है। कहता था, जब तेरी मां फुलकारी बनाना शुरू करेंगी, तो मैं देखने आऊंगा कि कैसे बनाती हैं। जो साहब खुश हो गया, तो मुझे इससे बड़ी नौकरी भी मिल सकती है, मैं बड़ा अफसर बन सकता हूं।

(ग) तात्पर्य यह है कि यावत् विद्या और ज्ञान पहले जिह्वा से कहकर प्रकट न किए गए होते तो केवल लेख शक्ति से कुछ न होता, न हमारी सभ्यता इस छोर तक पहुंचती । जबान को दबाना क्रोध को दबा रखने का एक ही उपाय है। कई बार की आजमाई हुए बात है कि कैसा ही क्रोध आया हो चिल्लाने के एवज धीरे-धीरे बोलो, क्रोध क्रम-क्रम आप ही शांत हो जाएगा।

(घ) भवभूति की चाहे जितनी तारीफ करो, बस, कालिदास से बड़ा न कहो। कालिदास के बराबर कहने से भी उन्हें मन में खीझ होती। दूसरा कुछ प्रतिवाद करता तो 'चुप्प' 'गुडुप्प' हो जाते। हम लोग कुछ खुसर-पुसर करते तो गुस्से में कहते, थोड़ा पढ़ा-वढ़ा भी करो।' गुस्से में वह गुस्से का अनुभव कम करते, थकान का अनुभव ज्यादा करते।

2. (क) हिन्दी गद्य के उद्‌भव और विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 12

अथवा

हिन्दी कहानी की विकास - यात्रा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ख) ''हामिद'' का चरित्र-चित्रण कीजिए। 12

अथवा

''चीफ की दावत'' कहानी का कथ्य लिखिए।

(ग) ''जवान'' निबंध के आधार पर 'जबान पर लगाम' के फायदे बताइये। 12

अथवा

''होना कुछ नहीं का'' निबंध का व्यंग्य उदघाटित कीजिए।

(घ) ''गिल्लू'' संस्मरण का कथ्य लिखिए। 12

अथवा

''वापसी'' संस्मरण का सार लिखिए।

3. निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : 7

(क) प्रेमचंद युगीन कहानी

(ख) रामचंद्र शुक्ल के निबंध

(ग) महादेवी के रेखाचित्र

(19) 17/5/18

[This question paper contains 7 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **4925A** **HC**

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Course : **B.A./B.Com.(Programme) Hindi (CBCS)**

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhayen

Semester : IV

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Instructions for Candidates :

छात्रों के लिए निर्देश :

(a) Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **All** questions are compulsory.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'शिवशंभु के चिट्ठे बनाम लॉर्ड कर्जन' निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिये। 12

P.T.O.

अथवा

'साहित्य का उद्देश्य' निबंध की तात्त्विक समीक्षा कीजिए।

2. संस्मरण के तत्त्वों के आधार पर 'भक्तिन' का मूल्याँकन कीजिये। 12

अथवा

रिपोर्ताज के तत्त्वों के आधार पर 'अदम्य जीवन' की समीक्षा कीजिये।

3. 'वैष्णव जन' की मूल संवेदना पर विचार कीजिये। 12

अथवा

'शायद' एकांकी की एकांकी के तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए।

4. 'उखड़े खम्भे' में निहित व्यंग्य की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिये। 12

अथवा

'लक्खा बुआ' के जीवन संघर्ष पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिये।

5. निम्नलिखित उद्धरणों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 7×2=14

(क) 'आपने माई लार्ड, जब से भारत में पधारे हैं, बुलबुलों का स्वप्न ही देखा है या सचमुच कोई करने योग्य काम भी किया है ? खाली अपना ख्याल ही पूरा किया है या यहाँ की प्रजा के लिये भी कुछ कर्त्तव्य पालन किया है ? एक बार यह बातें बड़ी धीरता से मन में विचारिये। आपकी भारत में स्थिति की अवधि के पाँच वर्ष पूरे हो गये। अब आप कुछ दिन रहेंगे तो सूद में, मूल धन समाप्त हो चुका। हिसाब कीजिये नुमायशी कामों के सिवा काम की बात आप कौन सी कर चले हैं और भड़कबाजी के सिवा ड्यूटी और कर्त्तव्य की ओर आपका इस देश में आकर कब ध्यान रहा है ?'

(ख) 'जिठानियाँ बैठकर लोक-चर्चा करतीं; और उनके कलूटे लड़के धूल उड़ाते। वह मट्ठा फेरती, कूटती, पीसती, राँधती और उसकी नन्हीं लड़कियाँ गोबर उठातीं, कंडे पाथतीं। जिठानियाँ अपने भात पर सफेद राब रखकर गाढ़ा दूध डालतीं और अपने लड़कों को औटते हुए दूध पर से मलाई उतारकर खिलातीं। वह काले गुड़ की डली के साथ कठौती में मट्ठा पीती, उसकी लड़कियाँ चने-बाजरे की घुघरी चबातीं।

(ग) 'जो हो, जब तक साहित्य का काम केवल मनबहलाव का सामान जुटाना, केवल लोरियाँ गा-गाकर सुलाना, केवल आँसू बहाकर जी का हल्का करना था, तब तक उसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी। वह एक दीवाना था जिसके गम दूसरे खाते थे। मगर हम साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो-जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे सुलाए नहीं, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।'

(घ) 'तब तो बंगाल अभी जीवित है! आज भी वह अपना रास्ता खोज निकालना जानता और चाहता है। भूख से व्याकुल होकर भी यह भारत का संस्कृति-जनक सिर झुकने को तैयार नहीं है। आज भी वह इन सब आँध ी-तूफानों को झेलकर फिर से विराट रूप में फूट

निकलना चाहता है। सचमुच कोई इनका कुछ नहीं कर सकता। यदि जनता में चेतना है, तो इन्हें भूखों मारने वाले नर-पिशाच नाज-चोरों का अंत दूर नहीं है।'

6. निम्नलिखित उद्धरणों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये - 7+6=13

(i) 'महात्मा जी ने यह क्या किया। इस समय सत्याग्रह बन्द करने की बात सोची ही नहीं जा सकती... महात्मा जी को सत्याग्रह रोकने का क्या अधिकार है... इतने बड़े असहयोग में, इतने बड़े देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ने में रक्तपात तो होगा ही... अगर किसी एक स्थान पर दुर्घटना हो गयी तो सारे देश को दण्ड क्यों दिया जाए। अब देश की विश्व के सामने क्या प्रतिष्ठा रह जाएगी...'

(ii) लोग जुलूस बनाकर राजा के पास गए और कहा, 'महाराज, आपने तो कहा था कि मुनाफाखोर बिजली के खम्भे से लटकाये जाएँगे पर खम्भे तो वैसे ही खड़े हैं और मुनाफाखोर स्वस्थ और सानंद हैं।'

राजा ने कहा, ''कहा है तो उन्हें खम्भों से टांगा ही जाएगा। थोड़ा समय लगेगा। टांगने के लिए फन्दे चाहिए। मैंने फन्दे बनाने का आर्डर दे दिया है। उनके मिलते ही, सब मुनाफाखोरों को बिजली के खम्भों से टांग दूँगा।''

(iii) कोई भी चीज मन को उलझाती नहीं। उलझाती है, तो बस पाँच मिनट के लिए, दस मिनट के लिए, घण्टे-भर के लिए। नहीं, घण्टे भर के लिए कोई चीज़ मन को नहीं उलझाती...कोई चीज़ होल्ड नहीं करती। लगता है, कुछ होना था, नहीं हुआ। शायद कल होगा। वह कल होता ही नहीं। बात कुछ समझ में नहीं आती।

(iv) 'अब लक्खा बुआ मलकिन थीं। उनमें परिवर्तन आ गया। लोग देखते रह जाते - ये वही लक्खा है ? काजल-मिसरी वाली छैल-छबीली। देखैं इधर, आँख मारैं उधर। वे अब सीधी-सादी रहने लगीं। सर पर बोझा उठावैं। खाद ढोएँ, जाँघ तक साड़ी कस कर

महाराज के साथ पानी दें। धान काटैं, गेहूँ काटैं, दंवई करैं। ओसावैं। सर पर लाद के अनाज घर पहुँचावैं। लक्खा बुआ सिंगार-पाट भूल गईं। पक्की किसानिन बन गई। खेत में काम करने के अलावा अब वे घर भी छाने-छोपने लगीं।'

(90)

[This question paper contains 6 printed pages.] 18/5/18

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4938A **HC**

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadhya Vidhayen (अन्य गद्य विधाएँ)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) HINDI (CBCS)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'शिवशंभू के चिट्ठे' निबंध में अभिव्यक्त राजनीतिक सरोकारों की विवेचना कीजिए।

अथवा

'साहित्य का उद्देश्य' निबंध का सार लिखिए। (12)

2. 'भक्तिन स्त्री जीवट का प्रतीक है'। विचार कीजिए।

P.T.O.

अथवा

'अदम्य जीवन' बंगाल के अकाल का जीवन्त चित्र है।' तर्क सहित उत्तर दीजिए। (12)

3. 'वैष्णव जन' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

अथवा

'शायद' एकांकी में मोहन राकेश ने आधुनिक परिवारों में व्याप्त ऊब एवं एकरसता की समस्या का रेखांकन किया है। स्पष्ट कीजिए। (12)

4. 'उखड़े खम्भे' व्यंग्य विधा की कसौटियों पर एक सफल व्यंग्य रचना है। तर्क सहित उत्तर दीजिए।

अथवा

'लक्खा बुआ बड़ा कारुणिक चरित्र है।' विश्वनाथ त्रिपाठी की आत्मकथा के संकलित अंश के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए। (12)

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (7×2=14)

(क) आज शिवशंभू की मनोवांछा पूर्ण हुई। आज उसे बुलबुलों की कमी नहीं है। आज उसके खेलने का मैदान बुलबुलिस्तान बन रहा है। आज शिवशंभू बुलबुलों का राजा ही नहीं, महाराजा है। आनन्द का सिलसिला

यहीं नहीं टूट गया। शिवशंभू ने देखा कि सामने एक सुंदर बाग है। वहीं से सब बुलबुलें उड़कर आती हैं। बालक कूदता हुआ दौड़कर उसमें पहुंचा। देखा, सोने के पेड़-पत्ते और सोने के ही नाना रंग के फूल हैं। उन पर सोने की बुलबुलें बैठी गाती हैं और लड़ती फिरती हैं। वहीं एक सोने का महल है। उस पर सैंकड़ों सुनहरी कलश हैं। उन पर भी बुलबुलें बैठी हैं।

(ख) अब साहित्य ने यह काम अपने जिम्मे ले लिया है और उसका साधन सौन्दर्य-प्रेम है। वह मनुष्य में इसी सौन्दर्य-प्रेम को जगाने का यत्न करता है। ऐसा कोई मनुष्य नहीं, जिसमें सौन्दर्य की अनुभूति न हो। साहित्यकार में यह वृत्ति जितनी ही जाग्रत और सक्रिय होती है, उसकी रचना उतनी ही प्रभावमयी होती है। प्रकृति-निरीक्षण और अपनी अनुभूति की तीक्ष्णता की बदौलत उसके सौन्दर्य-बोध में इतनी तीव्रता आ जाती है कि जो कुछ असुन्दर है, अभद्र है, मनुष्यता से रहित है, वह उसके लिए असह्य हो जाता है।

(ग) भक्तिन का दुर्भाग्य भी उससे कम हठी नहीं था, इसी से किशोरी से युवती होते ही बड़ी लड़की भी विधवा हो गई। भइयहू से पार न पा सकने वाले जेठों और काकी को परास्त करने के लिए कटिबद्ध जिठौतों में आशा की एक किरण देख पाई। विधवा बहिन के गठबन्धन के लिए बड़ा जिठौत अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया, क्योंकि

उसका हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता। भक्तिन की लड़की भी माँ से कम समझदार नहीं थी, इसी से उसने वर को नापसन्द कर दिया।

(घ) बूढ़ा फिर कहने लगा। अबके उसका स्वर दृढ़ था-'इस गांव में आज घरों पर किस की दृष्टि ठहरेगी, भैया ? इधर देखो, वे जो छाया में सो रही हैं चुपचाप, वे मिट्टी की कच्ची कब्रें, गिनकर देख लो, अगर पाँच सौ से कम दिखाई पड़ें! और एक-एक में एक ही आदमी दफनाया गया हो, यह भी कोई जरूरी बात नहीं है। यह है हम मुसलमानों की बात। और अगर तुम सुनना चाहते हो कि हिंदू क्यों नहीं मरे, तो जाकर शीतलक्खा की धारा से पूछो कि क्यों तू शिद्धिरगंज के सैंकड़ों किसानों को बहा ले गई, जिनकी हड्डियों तक का आज पता नहीं ?'

6. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7+6=13)

(क) बापू बोले, सरोजनी देवी, आप को इस तरह नाराज होने की आवश्यकता नहीं है बल्कि खुशी से नाचने की है। तुम यह समझ लो कि भगवान ने हम पर बड़ी कृपा की। अगर वह मुझसे यह लेख न लिखवाता और आश्रम में जो दोष प्रकट हुए हैं उन्हें दबाकर बैठ जाता तो यह 'आश्रम' न रहता, नरक धाम बन जाता और इसमें रहने वाले हम सब अन्दर-ही-अन्दर सड़ने लगते।

अथवा

आज अगर हम वहाँ होते, तो...! तुम्हारा मन हमेशा उन चीज़ों के लिए भटकता है जो तुमसे दूर हैं। पास होने पर चाहे तुम उन्हें देखे भी नहीं... पर उनका सेंक तुम्हें पहुंचता रहना चाहिए। दरवाजे के पास जाकर पुरुष का ध्यान बाहर की तरफ चला जाता है। वह पलभर उधर देखता रहता है। उनमें से एक बहुत अच्छा है। किन में से? बिल्ली के बच्चों में से। वह जिसके सफ़ेद चित्तियाँ हैं। वह तुम किसी को मत देना। मुझे तो दूसरा पसन्द है। वह जो ..... (उधर से हटकर जाता हुआ) मैं कहना चाहता था कि क्यों न महीने-भर का प्रोग्राम बनाकर हम दोनों सूरत चलें ?

(ख) लोग जुलूस बनाकर राजा के पास गए और कहा, "महाराज, आपने तो कहा था कि मुनाफाखोर बिजली के खम्भे से लटकाये जाएँगे पर खम्भे तो वैसे ही खड़े हैं और मुनाफाखोर स्वस्थ ओर सानंद हैं।" राजा ने कहा, "कहा है तो उन्हें खम्भों से टांगा ही जाएगा। थोड़ा समय लगेगा। टांगने के लिए फन्दे चाहिए। मैंने फन्दे बनाने का आर्डर दे दिया है। उनके मिलते ही, सब मुनाफाखोरों को बिजली के खम्भों से टांग दूँगा।"

अथवा

लक्खा बुआ की शादी हुई लेकिन ससुराल गई ही नहीं। ससुराल के लिए घर से चलीं। लेकिन पहुंची नहीं। कई बार णादी हुई। कई बार

घर से दूल्हे के साथ ससुराल के लिए निकलीं। पहुँची एक बार भी नहीं। गांव से बाहर कदम्ब पेड़ के नीचे डोली उतारते ही बिस्कोहर के लौंडे पहुंच जाते। ससुराल वालों को मार पीट कर भगा देते। लक्खा को लौटा लाते। लक्खा पुराने दिलगीरों को 'ना' नहीं कर पातीं। मुहल्ला फिर से आबाद, बिस्कोहरी भाषा में जगजियार हो जाता।

This Question Paper contains 3 printed papers

S. No. of Question Paper: 495 Roll No.______________

Unique Paper Code: 205440

Name of the Course: M.I.L. Hindi B

आधुनिक भारतीय भाषा: हिन्दी ख

Name of the Paper: B.A. Programme

Semester: IV

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Time: 3 Hours Max. Marks: 50

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए.
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं.

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए----

(क) दुर्भिक्ष मानो देह धर के घूमता सब ओर है, 8

हा! अन्न!हा हा!अन्न का रव गूँजता घनघोर है।

सब विश्व में सौ वर्ष में,रण में मरे जितने हरे,

जन चौगुने उनसे यहाँ दस वर्ष में भूखों मरे!

अथवा

जो कुलवंती हैं भीख भी वे माँग सकती हैं नहीं,

मर जायँ चाहे किन्तु झोली टांग सकती हैं नहीं!

संतान ने आकर कहा—'माँ ! रात तो होने लगी,

'भूखे रहा जाता नहीं माँ!' सुन जननि रोने लगी।

(ख) 'बाई इलेक्शन' में सरकारी पार्टी के उम्मीदवार गयादत्त को जो जीत हुई है, मंत्रीजी ने मुझसे कहा,'पार्टी को जरा भी उम्मीद न थी कि हमारी जीत होगी, पर मिस्टर राजन, आपकी मदद ने जो कमाल दिखाया, हमें उससे बेहद खुशी हुई...आपका कमिश्नर होना मुबारक हो।' उनका मतलब था 'बाई इलेक्शन'में मैंने बेईमानी की है और यह कमिश्नरी मुझे उसी में इनाम में दी गई है... 'दिस इज़ समथिंग हारिबुल'...। 7

अथवा

नमस्ते....जी हाँ सही है...गोदाम सील करा दिया है|फायर आर्म्स भी...जी...जी आपको याद होगा....ख़ास तौर पर मुझे इस जिले का चार्ज दिया गया था....आपके सीक्रेट आर्डर्स भी हैं मेरे पास| जी... मैं औरों की तरह कैसे होता| जी ....जी...आप ऑर्डर कीजिये...सब हो जाएगा| जी नहीं, वह मैं हर्गिज नहीं कर सकता|

(ग)बूढ़े दुकानदार ने संदेह से महानामन् को देखते हुए कहा—"शुल्क,तुम दे सकते है, सो तो है,परन्तु भाई तुम हो कौन?जानते हो, वैशाली में बड़े -बड़े ठग और चोर-दस्यु नागरिक का वेश बनाकर आते हैं| वैशाली की संपदा ही ऐसी है भाई, मैं सब देखते हुए ही बूढ़ा हुआ हूँ|" 8

अथवा

दोनों आगन्तुक अब आसनों पर बैठ गए| बूढ़ा चुपचाप मद्य ढ़ालने लगा| अब आगन्तुक ने महानामन् की ओर देखा,जो अभी चुपचाप अँधेरे में खड़े थे|अम्बपाली थककर घुटनों पर सिर रखकर सो गई थी| दीपक की पीत प्रभा उसके पील मुख पर खेलती हुई काली अलकावलियों पर पड़ रही थी|

2. 'भारत-भारती' में मैथिलीशरण गुप्त भारत की प्राचीन दुरावस्था दिखाकर भविष्य के प्रति सावधान करना चाहते हैं', इस कथन पर विचार कीजिए| 15

अथवा

'भारत- भारती' रचना की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए|

3. "मिस्टर अभिमन्यु' वर्तमान युग के मनुष्य की त्रासदी का चित्र प्रस्तुत करता है', इस कथन पर विचार कीजिए| 15

अथवा

'विमल' का चरित्र चित्रण कीजिए|

4. 'वैशाली की नगरवधू' उपन्यास की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए| 15

अथवा

'आम्रपाली' का चरित्र चित्रण कीजिए|

5. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए--- 7

1. भारत भारती- काव्य भाषा

2.मिस्टर अभिमन्यु नाट्य भाषा

3. वैशाली की नगरवधू कथा भाषा